जैनी

Jaini | A revival of Jain Kalpasūtra manuscript style created in 1503, Jaini is a contemporary calligraphic Devanāgarī typeface with distinct features, available in two styles.

Designed by:
Girish Dalvi, Maithili Shingre and Taresh Vohra

© Ek Type 2016-17.
All Rights Reserved

Ek Type

एक

www.ektype.in

जैनी १

With traditional conjuncts

अक्कल•जिल्हा•ध्वनी•कच्चा•ब्राम्हण•शब्द
चन्दन•मत्स्य•क्वालिटी•विंध्य•ह्रास•कल्ला
वास्तव•पुष्कराज• संन्यास•अम्बर•चन्द्रमा

जैनी २

With contemporary conjuncts + Latin

अक्कल•जिल्हा•ध्वनी•कच्चा•ब्राम्हण•शब्द
चन्दन•मत्स्य•क्वालिटी•विंध्य•ह्रास•कल्ला
वास्तव•पुष्कराज• संन्यास•अम्बर•चन्द्रमा
Mumbai•Delhi•Bangalore•Vadodara
Hyderabad•Chennai•Kolkata•Surat
Pune•Jaipur•Lucknow•Indore

 © 2016-17 ALL RIGHTS RESERVED

ॐअआइईउऊऋऌऍऎएऐऑऒओऔकखगघ
ङचछजझञटठडढणतथदधनऩपफबभमयर
ऱलळऴवशषसहक़ख़ग़ज़ड़ढ़फ़य़ॠॡअंअः।
॥०१२३४५६७८९॰ॲअेआेऔअुअूझ़मगज्ञ?ड्रब्र
क्षज्ञलशक्ख्ग्घ्ङ्च्छ्ज्झ्ञ्ट्ठ्ड्ढ्ण्त्थ्द्
ध्न्ऩ्प्फ्ब्भ्म्य्र्ऱ्ल्ळ्ऴ्व्श्ष्स्ह्क़्ख़्ग़्ज़्ड़्
ढ़्फ़्य़्श्ल्क्ष्ज्ञ्कुखुगुघुङुचुछुजुझुञुटुठुडुढुणु
तुथुदुधुनुऩुपुफुबुभुमुयुरुऱुलुळुऴुवुशुषुसुहुक़ु
ख़ुग़ुज़ुड़ुढ़ुफ़ुय़ुशुलुक्षुज्ञुकूखूगूघूङूचूछूजूझूञू
टूठूडूढूणूतूथूदूधूनूऩूपूफूबूभूमूयूरूऱूलूळूऴूवू
शूषूसूहूक़ूख़ूग़ूज़ूड़ूढ़ूफ़ूय़ूशूलूकृखृगृघृङृचृछृजृ
झृञृटृठृडृढृणृतृथृदृधृनृऩृपृफृबृभृमृयृलृळृऴृवृ
शृषृसृहृक़ृख़ृग़ृज़ृड़ृढ़ृफ़ृय़ृशृलृक्रख्रग्रघ्रङ्रच्रछ्रज्र
झ्रञ्रट्रठ्रड्रढ्रण्रत्रथ्रद्रध्रन्रप्रफ्रब्रभ्रम्रय्रर्ल्रळ्रव्रश्रष्र
स्रह्रक़्रख़्रग़्रज़्रफ़्रय़्रश्रलक्ष्रज्ञ्रश्रुश्रूश्रृश्र्क्ष्रुज्ञ्रुक्रख्रग्र
घ्रङ्रच्रछ्रज्रझ्रञ्रट्रठ्रड्रढ्रण्रत्रथ्रद्रध्रन्रप्रफ्रब्रभ्रम्रय्र
ल्रळ्रव्रश्रष्रस्रह्रक़्रख़्रग़्रज़्रफ़्रय़्रक्ष्रज्ञ्रष्ट्रस्ट्रट्ट्यट्ठ्य
ड्ड्यड्ढ्यढ्ढ्यद्द्यद्ध्यद्ब्यद्भ्यद्म्यद्व्यध्यन्यभ्यथ्यष्ट्य
ष्ठ्वष्ठ्यठ्यष्ठ्वङ्कङ्गङ्घञ्ज्यट्टट्ठट्यद्वद्गट्यड्डड्ढड्यढ्ढल्य

 © 2016-17 ALL RIGHTS RESERVED

दृ द्द द्ध द्न द्ब द्भ द्म द्य द्व क्ष्म्य क्स्प्र क्स्प्ल स्क्र त्स्न्य त्फ्ल्य
न्त्स्य स्म्य ब्स्ट्र त्त्य त्क क्त्र क्प्र क्व्य क्ष्म क्ष्य क्ष्व क्स्ट क्स्ड
क्स्त क्स्प ख्ब्य ग्ध्व ग्ध्य ग्न्य ग्भ्य ग्र्य च्छ्व ञ्झ ञ्ज्य ञ्ज्व
ङ्क्य ङ्ग्र ञ्च्य त्क्य त्क्र त्क्व त्क्ष त्त्न त्त्व त्त्य त्त्व त्न्य त्प्र त्प्ल
त्म्य त्र्य त्स्फ त्स्न त्स्य त्स्व न्त्स न्त्य न्त्व न्त्स न्ध्य न्ध्व द्ध्र द्ध्व
न्ध्य न्ध्र न्ध्व न्त्र न्भ्य न्भ्व न्म्य न्द्ध स्ट स्न्य न्त्न्य प्त्य ष्ण्य ब्ज्य
ब्ध्व ब्भ्र ब्द्य म्प्र म्ब्य म्ब म्भ्र म्भ्व ल्क्य ल्ग्य ल्द्र ल्ल्य ल्ड
ल्ह्य ष्क्र ष्ण्य ष्प्र ष्म्य स्क्र स्क्व स्त्य स्त्र स्त्व स्थ्य स्प्र स्म्य
ह्म्य क्क क्ख क्च क्ज क्झ क्ट क्ण क्त क्थ क्द क्न क्प क्फ
क्म क्य क्ल क्व क्श क्स ख्ख ख्न ख्र ख्म ख्य ख्व ख्श ग्ग ग्घ
ग्ज ग्ण ग्द ग्ध ग्न ग्ब ग्भ ग्म ग्य ग्ल ग्व ग्स घ्न घ्म घ्य च्च च्छ
च्न च्म च्य ञ्क ञ्ज ञ्झ ञ्ट ञ्ड ञ्त ञ्द ञ्न ञ्ब ञ्म ञ्य ञ्व
झ्झ झ्न झ्म झ्य ञ्च ञ्छ ञ्ज ञ्श ण्ट ण्ठ ण्ड ण्ढ ण्ण ण्म
ण्य ण्व ण्ह त्क त्ख त्त त्थ त्न त्प त्फ त्म त्य त्ल त्व त्स थ्थ थ्य
थ्व ध्न ध्म ध्य ध्व न्क न्ग न्च न्छ न्ज न्ट न्ड न्त न्थ न्द न्ध न्न न्प न्फ
न्भ न्म न्य न्व न्श न्स न्ह प्छ प्ट प्त प्न प्प प्फ प्म प्य प्ल प्व प्श प्स
फ्ज फ्ट फ्त फ्थ फ्प फ्फ फ्य फ्ल फ्श ब्ज ब्झ ब्ड ब्न ब्द ब्ध
ब्न ब्ब ब्भ ब्य ब्ल ब्व ब्श ब्स ब्ज़ भ्य भ्ल भ्व म्त म्द म्न म्प म्फ म्ब म्भ
म्म म्य म्ल म्व म्श म्स म्ह य्य य्व ल्ह ल्क ल्ख ल्ग ल्च ल्ज ल्ट

 © 2016-17 ALL RIGHTS RESERVED

ल्ठ ल्ड ल्ढ ल्न ल्थ ल्द ल्प ल्फ ल्ब ल्भ ल्म ल्य ल्ल ल्व ल्श ल्स

ल्ह ल्ज़ ळ्य ळ्ळ व्ड व्य व्ल व्व व्ह श्क श्च श्छ श्ट श्न श्न श्म श्य

श्ल श्व श्श श्क़ ष्क ष्ट ष्ठ ष्ण ष्प ष्फ ष्म ष्य ष्व ष्ष स्ख स्ड स्ट स्त

स्थ स्द स्न स्प स्फ स्ब स्म स्य स्ल स्व स्स ह्ण ह्न ह्म ह्य ह्ल ह्व

क़्त क़्फ क़्ब क़्म क़्क क़्फ़ ख़्न ख़्म ख़्य ख़्व ख़्श ख़्म ज़्य ज़्ज

क्न फ़्स फ़्ज फ़्फ़ ल क्स्ल त्ल क्क क्श ख्श ग्ल ञ्श त्ल न्श

प्ल प्श फ्ल फ्श ब्ल ब्श भ्ल म्ल म्श ल्ल व्ल ङ्क ङ्छ ङ्ट ङ्म ङ्य

श्ल ङ्श ङ्क़ म्ल ह्ल ख़्श ल्श क्कु क्कू क्कृ क्तु क्तू क्तृ क्यु क्यू क्रु

क्रू ख्खु ग्यु ग्यू ग्यृ घ्यु घ्यू ट्टु ट्टू ट्ठु ट्ठू ट्यु ट्यू ठ्यु ड्डु ड्डू ड्यु ड्यू ड्गु ड्गू

तु तू तृ त्तु त्तू त्यु त्यू त्रु त्रू थ्यु थ्यू द्गु द्गू द्गृ द्दु द्दू द्दृ द्धु द्धू द्धृ द्नु द्नू द्बु

द्बू द्बृ द्भु द्भू द्यु द्यू द्यृ द्रु द्रू द्रृ द्वु द्वू द्वृ ध्यु ध्यू न्नु न्नू न्थु न्थू न्यु न्यू

प्तु प्तू फ्तु प्यु प्यू प्यृ फ्यु फ्यू ब्यु ब्यू भ्यु भ्यू भ्यृ म्यु म्मु म्मू ल्लु ल्लू ल्लृ व्यु श्चु श्चू

श्नु श्नू श्यु श्यू श्यृ श्लु श्लू ष्टु ष्टू ष्ठु ष्ठू ष्णु ष्णू ष्पु ष्पू ष्यु ष्यू स्यू ह्नु ह्यु ह्यू

ह्नु ह्नू ज ज़ ज्र ज़्र ज़्तु ज्रू ज्रृ ज़्रु ज़्रू ज़्रृ ज्र ज़्र ज्झ ज्य ज्व

ज्य ब्ज्य क्ज ग्ज ज्क ज्ज ज्झ ज्ट ज्ड ज्त ज्द ज्रू ज्ब

ज्म ज्य ज्व ज्ज ल्ज फ्ज ब्ज ब़्ज ल्ज ल़्ज स्ज ज़्य ज़्ज फ़्ज

ते तै ते तै तॅ तॉ तो तो तौ तौ ता ती ति तें तें तेँ तैँ तं ति

ती ते तै र्त र्त ! # $ % ( ) * + , - . / 0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 : ; <

= > ? [\ ] _ { | } £ ¤ ¥ © ® ° × ÷ ‘–’— “±” • … ₹ ™ – ◌

 © 2016-17 ALL RIGHTS RESERVED

॥श्रीरामसमर्थ॥ ॥श्रीमत् दासबोध॥

दशक एकोणविसावा : शिकवण समास पहिला :

लेखनक्रियानिरुपण

ब्राह्मणें बाळबोध अक्षर। घडसुनी करावें सुंदर। जें देखतांचि चतुर। समाधान पावती॥१॥ वाटोळें सरळें मोकळें। वोतले मसीचें काळें। कुळकुळीत वोळी चालिल्या ढाळें। मुक्तमाळा जैशा॥२॥ अक्षर मात्र तितुकें नीट। नेमस्त पैस काने नीट॥ आडव्या मात्रा त्या हि नीट। आर्कुली वेलांड्या॥३॥ पहिलें अक्षर जें काढिलें। ग्रंथ संपेतों पाहात गेलें॥ येका टांकेंचि लिहिलें। ऐसें वाटे॥४॥ अक्षराचें काळेपण। टांकाचें ठोसरपण। तैसेंचि वळण वांकाण। सारिखेंचि॥५॥ वोळीस वोळी लागेना। आर्कुली मात्रा भेदीना॥ खालिले वोळीस स्पर्शेना। अथवा लंबाकार॥६॥ पान शिषानें रेखाटावें। त्यावरी नेमकचि ल्याहावें। दुरी जवळी न व्हावें। अंतर वोळींचे॥७॥ कोठें शोधासी आडेना। चुकी पाहातां सांपडेना। गरज केली हे घडेना। लेखकापसुनी ॥८॥ ज्याचें वय आहे नूतन। त्यानें ल्याहावें जपोन॥ जनासी पडे मोहन। ऐसें करावें॥९॥ बहु बारिक तरुणपणीं। कामा नये म्हातारपणीं। मध्यस्त लिहिण्याची करणी। केली पाहिजे॥१०॥ भोंवतें स्थळ सोडून द्यावें। मधेंचि चमचमित ल्याहावें। कागद झडतांहि झडावें। नलगेचि अक्षर॥११॥ ऐसा ग्रंथ जपोनी ल्याहावा। प्राणी मात्रास उपजे हेवा। ऐसा पुरुष तो पाहावा। म्हणती लोक॥१२॥ काया बहुत कष्टवावी। उत्कट कीर्ति उरवावी॥ चटक लाउनी सोडावी। कांहीं येक ॥१३॥ घट्य कागद आणावे। जपोन नेमस्त खळावे॥ लिहिण्याचे सामे असावे। नानापरी॥१४॥ सुद्या कातद्या जागाईत। खळी घोंटाळें तागाईत। नाना सुरंग मिश्रित। जाणोनि घ्यावें॥१५॥ नाना देसीचे बरु आणावे। घटी बारिक सरळे घ्यावे। नाना रंगाचे आणावे। नाना जिनसी॥१६॥ नाना जिनसी टांकतोडणी। नाना प्रकारें रेखाटणी।

 © 2016-17 ALL RIGHTS RESERVED

वत्सला मातृभूमि!

“हे केशव, तो क्या अब युद्ध नहीं होगा?”

धनुष्यबाण

निषेवते प्रशस्तानी निन्दितानी न सेवते।

कलात्मक रूप

समास दहावा : विवेकलक्षणनिरूपण ॥ श्रीरामसमर्थ ॥ जेथें अखंड
नाना चाळणा। जेथें अखंड नाना धारणा। जेथें अखंड राजकारणा।
मनासी आणिती॥२॥ सृष्टीमधें उ तम गुण। तितुकें चाले निरूपण।
।निरूपणाविण क्षण। रिकामा ◆ नाहीं॥३॥ चर्चा आशंका प्रत्यो
तरें। कोण खोटें कोण खरें। नाना वगत्तुत्वें शास्त्राधारें। नाना चर्चा॥
भक्तिमार्ग विशद कळे। उपासनामार्ग आकळे। ज्ञानविचार निवळे। अं
संगीत उत्तरें। नेमक बोलतां अंतरें। निववी सकळांचीं॥६॥ आवडी ला

अनुस्वारश्चान्त्यरूपं बिन्दुरुत्तररूपं

Jaini | www.ektype.in | © 2016-17 ALL RIGHTS RESERVED

न हृष्यत्यात्मसम्माने नावमानेन तप्यते।
गंगो ह्रद इवाक्षोभ्यो यः स पंडित उच्यते॥

1 जो अपना आदर-सम्मान होने पर ख़ुशी से फूल नहीं उठता, १
और अनादर होने पर क्रोधित नहीं होता तथा गंगाजी के कुण्ड के
समान जिसका मन अशांत नहीं होता, वह ज्ञानी कहलाता है।

Who does not take pride after being honored;
does not show grief on being insulted, and whose
heart is like Ganga Sagar (i.e. vast and deep with no
regrets) can be called a truly educated person.

एकं हन्यान्न वा हन्यादिषुर्मुक्तो धनुष्मता।
बुद्धिर्बुद्धिमतोत्सृष्टा हन्याद् राष्ट्रम सराजकम्॥

2 किसी धनुर्धर वीर के द्वारा छोड़ा हुआ बाण संभव है किसी २
एक को भी मारे या न मारे। मगर बुद्धिमान द्वारा प्रयुक्त की हुई
बुद्धि राजा के साथ-साथ सम्पूर्ण राष्ट्र का विनाश कर सकती है।

If an archer shoots an arrow then there is a chance
that it might miss or kill a single person, but the trick
implemented by some intelligent person might
put an end to king and his whole kingdom.

एकमेवाद्वितीयम तद् यद् राजन्नावबुध्यसे।
सत्यम स्वर्गस्य सोपानम् पारवारस्य नैरिव॥

3 राजन! जैसे समुद्र के पार जाने के लिए नाव ही एकमात्र साधन ३
है, उसी प्रकार स्वर्ग के लिए सत्य ही एकमात्र सीढ़ी है,
कुछ और नहीं, किन्तु आप इसे नहीं समझ रहे हैं।

King! Like you need a ship to travel across the ocean,
similarly truth is the only means to get into heaven.
Why are you unable to understand this simple fact.

 © 2016-17 ALL RIGHTS RESERVED

Jaini | Open-type features

Akhanda vertical and horizotal conjuncts

क्+ष्+म्+य=क्ष्म्य | क्+व्+य=क्व्य / क्व्य

Akhanda forms for letter+belowbase mātrā

विद्या कामदुघा धेनुः सन्तोषो नन्दनं वनम्॥

Language alternates (Stylistic set 1)

शाळेत कल्ला केला > शाळेत कल्ला केला

Design alternates (Stylistic set 4, 5)

जो शृंगार-सज्जित > जो शृंगार-सज्जित

Abovebase mātrā alternates (Stylistic set 2)

क्रोध के समान है। > क्रोध के समान है।

Mātrā alternates (Stylistic set 3)

किती प्रपंची ते जन > किती प्रपंची ते जन

 © 2016-17 ALL RIGHTS RESERVED

ABCDEFGHIJKLMNOPQRSTUVWXY

Z abcdefghijklmnopqrstuvwxyz

&1234567890!?.,:;¿¡‘’*…()#₹@%

«»‹›-<=>±+÷–—— ×©®™º€£¥$¢•¶

§ªº“”ÁĂÂÄÀĀĄÅÃÆĆČÇĈĊĐĎĐḌÉĔ

ÊËĖÈĒĘẼƏĞĢĠĦḪḤHĲÍÎÏİÌĪĮĨJĶḴĹ

ĽĻḺŁLLṀṂMŃŇŅṄṆṈÑNŊÓÔÖÒŐŌ

ØÕŒÞŔŘŖṚṞRRRŚŠŞȘṢẞŤŢȚṬṮÚŬ

ÛÜÙŰŪŲŮŨẂŴẄẀÝŶŸẎỲỸŹŽŻáăâ

äàāąåãæćčçĉċðďđḍéĕêëėèēęẽə

ğģġħḫḥhĳíîïıìīįĩķḵĺľļḻłllṁṃmńň

ņṅṇṉñnŋóôöòőōøõœþŕřŗṛṟrrrśš

şșṣßťţțṭṯúŭûüùűūųůũẃŵẅẁýŷÿ

ẏỳỹźžżTTTYfbfifjflffhffiffjfflfkfþctst

 © 2016-17 ALL RIGHTS RESERVED

A typeface where the Latin takes a hint!

This is a font that adds a subtle Devanagari accent to Latin type. The visual grammar mimics its Devanagari counterpart with a twist in the pen angle of formal Latin calligraphy. Thus, to induce an effect of the Devanagari in the Latin, the primary step was to draw Latin letters with the pen angle of 45° sloping

विलयन • FUSION

left, which is traditionally observed in Devanagari calligraphy and type. The subtle effect of a shiro rekha (top line) has also been introduced on the tops of most capital letters and along the x-height of the lowercase letters. The Latin has been drawn with the intention of being used both along with the Devanagari, and as a

{ yukti yuktaṃ pragṛhṇīyāt bālādapi vicakṣaṇaḥ |
raveraviṣayaṃ vastu kiṃ na dīpaḥ prakāśayet || }

Subhāṣitas

Taking note of the ancient Sanskrit mantras for a happy life.

स्वरांजली

pṛthivyāṃ trīṇi ratnāni jalamannaṃ subhabhāṣitam |
mūḍhaiḥ pāṣāṇakhaṃḍeṣu ratna saṃjñā vidhīyate ||

 © 2016-17 ALL RIGHTS RESERVED